

...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

धर्मरत्न बज्राचाप सुरत श्री महाविहार II-240

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
दिविभुवि च यो विदेः स्मिन् वासि यत्तिष्ठेः परम



१० नमः ॥ प्रकृतिं ज्ञायतां त्रये ॥ ॥ श्रीमहातल कं रं मना न
 क्षा विनाशिते ॥ नाना इमं तता किं नाना यक्षि नि कुं
 नाना नानि र्मत्र मं का जे नाना मृगा ममा मा कृ ताना न
 कृ म जा तिलि म्मि मना दीक्ष वासि ताना ना हृद्य रुला
 य तू य द्य दामि तनि सु ले ॥ की र्ति न म इ



नमो भगवते कनकधराय ॥ भूषा प्रहं मय
यंकलसर्वसत्त्वा ॥ ३ ॥ भूषा नाडा नरेवि
नकपालबक्रैरुक्ता धैर्यं हि मकुषा नमि
वा सुदं ॥ ३ ॥ भूषा धनं कनककल्प

विभूषितां गनतं यं जतं विभूषितवान्
॥ ३ ॥ भूषा कनाथमवलोकितनामध
यं जं भूषा विभूषितसद्वं चरस्य नाजं
॥ ४ ॥ भूषा न नागवचला विभूषितसर्व
सत्त्वा संसा नवं कतिमिना नडा मागस

विंति कायूडी गति न छानु सनाय ॥

क ह्य ज घ ङ व ऊ ष ख
व ध द पु न ट ४ ४ घ ङ य
चि ४ ४ म य ख व स
ष ज द चि ४ ४ ४ ४

ॐ

॥३॥ विपुत्रादिनिन माहायक विमलनिन
पुत्राजिता नादि नि कु व व गे गाठ कला तदि
व क ह म डु ख ही न ॥ १॥ सुकत प मान स द न ल
न म य द टि ना जित ॥ हल न के स त वि र त ना
ख य य र व न नि वा सि न ॥ १॥ ध डि न व न प ड व क
न न ता ह न दि सा ल ना न न डु ठ न ॥ च नु न म न
ति नि न यित न त प्र जाली ॥ १॥ आ ना र क ह म य

सहित रु नि न क ह म डु ड व हित ॥ च नु न य क
~~॥ १॥~~ ॥ ना ग क स न रु नि न क ह म साहित ॥ १॥
ना ग गी ध व ड क कि न न ग न ड म नि ति रु त ॥ १॥
पु न र मे मा क या स्थित वि वि वि ड ड व ह न ध डि
त ॥ १॥ धा म मे नि म व वि त म ड ड ड ड त म ग म
दा द सा रु न व न ना य धा म धा ल वा गि म न ॥ १॥

मावर्तनस्यैव न शब्दत्वं क्लृप्तालयात् न स्यात्
॥ ७ ॥ दिवदत्तमनया गीतनाथिना दिवा । गितवत्त
न शब्दासर्वत्रु अमोः । आविगमसदन न शब्दत्वं । दिवस
दशवत्त । शब्दायां युच्यते वदथी । गीतनाथान्तरे न शब्दत्वं
मर्यादविधानस्य । काशिरत्नस्य भाष्ये शब्दात् क्लृप्तालयात् न शब्दत्वं
मर्याद । दिक्कृतनाथिस्य । शब्दत्वं स्यात् । गितवत्तमस्य
न शब्दत्वं । शब्दत्वं स्यात् । अभावद्वयस्य । अभावद्वयस्य

वाक्रिये इत्यमयरागस्तुयखे ॥ ७ ॥ यत्र न च उच्यते
 वादशास्त्रे वक्रा जयनियमकनायः सामदवयवक्राः ॥
 अमलकमलथानिःशायिवक्रासूया दशविल ॥ च उच्यते
 दयार्गसंयत्रश्व वक्रास इत्यमयाद्यकाजान्कार यया
 गखान्धार्त्त जयनमविधानसवर्त्त सामवदवाकनसंय
 त्रश्व निर्मलत्तीसजायनदश्व अभावक्रास्वीशन शतय
 गगजिगावलनसंयत्रश्व वृत्तयालयाक्रिये मयरागस्व

॥ १ ॥ वाक्वनयदनीलयुगुलीकायगादः मूनवियवजद
 गाविश्वकद्विसूया इदनियनिविनमूया गइवासाविमूका
 दशविल ॥ असहस्रनानामायानसंयत्रश्व नायायनस हा
 कूडरालहनयवर्त्ता कर्तुश्वयलायदसम मिखाथुना अ
 मयथावलभावका नानामायाद्यकात्वं नानावृयस्थाल
 अमानायायनत्वं नाकार्त्तशन गइवासदाकानगादमनय
 क शोजिगावलनसंयत्रश्व वृत्तयालयाक्रिये मयरागस्व ॥

॥ ८ ॥ हिमगिनि शिखलासुसंयोज्य विष्णु शिष्यवदहस
 दक्षावाधवभोगनीयह । सहगिनिवलमृशासायिभूय विष्णु
 ली दशवल ॥ यनमहानसेयनशव ॥ ११ ॥ ध्वनसचाधैरुं ॥ १२ ॥
 नायूरखान नागदोनानकाखाव विष्णुनासन देवमाचका धू
 ध्रुवतिवसुयादवाह यावर्गानसैयूकशव अमाहीध्वनतवध
 न विष्णुलक्ष्मीन शोदशवलकुलयालय मूषरागनसूय
 नखे ॥ ॥ नक्षलिनकलीशयासिइज्ज्यादानवाना सुनयति

नयिसचा विरुभमूठयुगा ॥ अहनिगिनिसूयः कामयकावि
 नय्या दशवल ॥ ॥ स्वर्गयाजादव ॥ १३ ॥ सजादल्यमान व
 ज्जोवर्त अमावज्जुज्ये असूनदाकायादवनाज अमाह
 इवनिधयन सावीदवीलसहजव विरुमूठाल्या क्रिनसीना
 प्रिसियन कामधायानादसगावकीधन राजिगावलनसैयव
 इलयालय क्रिथेमूषरागनखे ॥ १० ॥ हिमगिनिमृशासाम
 ययापानुगाहा हटकाठिननुडरी ॥ लीगलासकिहसशव

रुद्रसयिगासा नवगीक धुमधा दग्गवल ॥ गङ्गवननमेश
कश्यप वलरुडस चायथा वदुमा (थं) कमूठयायथं भाय
खान धीगादान द्वादमिखाश्व दधच्च कानाकात सायाद्रि
यातकागका कदा अमावलितरुदवीशनं अवकीदवीनकण्ठ
नग्नयाद रुद्रिगावलनसयनश्व द्धुलया नयामुपरातन
मयरागैव ॥ ११ ॥ गङ्गमुखदगभेकाः सर्वथा विद्युक्ता वि
गलितमदधानाः यद्यदाकीर्णगण ॥ गलायतिनयिसूयावाप

लायानमर्ता दग्गवल ॥ समरुलाकया विद्युद्वनला गला
यतिभाया यिनायरुगाठ कागीखाल धदच्चयुश्व समरुला
कयाकविधिमावकवर्त मद्यथानाकायकावर्चाय रुमनला
लीङ्गानिन दीगादगङ्गुनकथाय अमाविद्युद्यवभाया यिना
यत्वीशनं धनकायक अजावत्तनशनं रातगवात्रथा गनद
गवल द्धुलयालयाद्रिथे इत्यमयराकख ॥ १२ ॥ अङ्गगीक
ममनीलायस्यगकिक्काय नवननिलवयुष्माद्यमरुलाकवि

हृत्ता । दिनयनननयाः सोनित्यशुक्ल शिशुत्वा दशवत् ॥ १० ॥
धनसकायकाया कमालस नीसिवास्वानर्थवधानसुशुव सु
नवलाहागग शक्तिमत्तयन्नशुव यत्नास्वानहावर्थमनादन
य्यागरवालत्था लावै कांचानूहदेत्यभावका ॥ ११ ॥ धनसकाय
दाया अमाकमालत्वे क्रिथेशन वालकशुनदान शासगवान
भागन दशवत् छलयालयाशन इत्यनयरागधनयव
॥ १२ ॥ कायिलजटकलायानकक यवूटादी यस्ययानिनिः

काल इद्यकावातिरुः समलसलंद लितां यसायिसूया इना
सा दशवत् ॥ अग्निदवनासगीयिवज्जनसईशुकरान् ॥ १३ ॥
धनमृगावसववसकात् वायकयाविवरुणार्क कामववतारु
गनमेशुव अमाअग्निदवनात्वेयन शासगवान् भागनछलया
लया दशवत्तिल्य क्रिथे इत्यममयरागर्ख ॥ १४ ॥ यमवव
तकवनायकदेत्याम गद्दा दिविउविगगलवालाकयालास्त
याशा । यवनीमदकनादेवी राकास्तयिसूया दशवत् ॥ १५ ॥

कपालनाडा समस्तवृद्धमनाडा वनूनाडवलयकनाडा देव
नाडा नागनाडा समस्तवृद्धाका आकाशग वृद्धीसञ्ज्ञनारम
भजन मवलाकपालदाका थक्क मिमाया अर्द्धकालन विवा
दसासी धनलाकपालदाका धन शारुगवान् दशवल जितावलन
सयनशब्द लयालयाशन मयरागनसयरागरे ॥ १५ ॥ अथ
यद्वन्द्वमरुतावत्यहर्गिनाया कडयूनरुविष्टुष्टावागवाल्मी
कवगांशयवयवगिविलाहीभादितास्तुयिसूया दशवल ॥ अथ

ताकधसमस्तदाका वसुधाना हर्गनाया अर्गीलयावा आविनद
का कडयायानाम यूनरुयायानाम वगिष्ठयायानाम वासवा
या वाल्मीकयाया आदिर्यवग्मदाका मवयास्तुविलासयाका दा
का अह्वानशसी धदाका धन शारुगवान् दशवल जितावलन
यालयाकिथं डत्यनसयरागरे ॥ १६ ॥ अथ वज्रलक्षिनिमया
भाहजातावताग मनुकायिवकनाया रामिनामूठवना सम
मुखवनिहीतावालिभास्तुयिसूया दशवल ॥ अथ सावसमूड

सहायताकादाका अह्मनमालनदावद्धाका मनुष्याकानन
 काकपिनकाया धनित्वादि यन्मनिहसी उज्ज्वलनाहसी उ
 लासूखननहानहसी अह्मनिसमस्तदाकायन सारुगवान्नथ
 गन दशवलद्वलयानयाहर्न क्रिथं डत्यमयरागह्वययव
 ॥ ११ ॥ अह्मनवगनहाना राद्यमानाविदूया अलमखितवि
 द्यानेऽथनवदद्यदहाः डरुयगतिविहिना नित्यसूयाधनया
 दगवल ॥ १२ ॥ राजनवस्तनभाउनव आगतावपयं विदूयहर्न

अनकमावकावदाकान गिकथंगंगमी वहीधनसवस्तुही
 नहसी धर्तक्रिथंयन धनग्रसमनदाका सादशवलजिगाव
 लनसंयन्त्रशवस्तु दलयालययाहर्न क्रिथं डत्यमयरागह्वय
 यव ॥ १४ ॥ सुयरागनवेकस्या ह्मनालीकवशकाः अह्मनने
 मिलागाबानी निमस्यामितानवि ॥ सुयरागलियुद्धकायहर्न
 ख कर्नद्वलयालययाहर्नखहननीमिलित मिया । मवदाका
 याअह्मनि स्वीह्नकानदाकाया क्रिथंनूर्यमायाथंमायमा

लं ॥ १७ ॥ यूनः सरात यूनः नृधुगानविः यूनः शसौकः यूनः
प्रवसर्वनी ॥ मृत्कृजनाजर्मन (येव ह मून गतागतिमूरुजमान
वृष्टानि ॥ दृढमूर्दश्नं कर्नासूर्यखनूल हामोचदुमाखंडव्य
निश्नं हामोनिधयननालिश्नं शीयमालहनं द्या ॥ १८ ॥ यज
यनय यथैवदृष्टकृती निधयननालिश्नं वैनमृहनीदाव
नमसर्न ॥ १७ ॥ अहूननिडिउनीतमायिधनूय रुध्रावि
ज्ञातयनं विषययदोय ॥ कातयराधरुतुतुलिक्लिहयमानं

जागहियशततमवनमाः सुगस्य ॥ अहूननिडिउनीतमायिधनूय
द्वय अलगत्य अतीतायथाया तव उर्व यद्विषयभायारुगीस
धर्थिगकालस रिंममलिंवरुतुथायात् प्रजायनयाध ॥
धुडथं अमाखनमानमखन थइभाधसर्न ॥ १८ ॥ मीथ
यूगाकलशगानियिवनिभायं रुध्रीवजनिनवततदोपमस्य
यति ॥ धर्ममनकाविंशतनयिसिउतस्य नखियनं युपानिधीगु
तसागनस्य ॥ समरुदाकाश भाकलशुद्धिआदिन अगकनल